1080510 - A2

विद्यार्थी उत्तर-पुस्तिका में मुख पृष्ठ पर कोड नं. अवश्य लिखें।

Class - X
कक्षा - X

HINDI
हिन्दी

(Course B)
(पाठ्यक्रम ब)

निर्धारित समय : **3** घंटे] [अधिकतम अंक : **80**

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ **12** हैं।
- प्रश्न-पत्र में बाएँ हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में 18 प्रश्न हैं।
- कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।
- इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए **15** मिनट का समय दिया गया है। इस अवधि के दौरान छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और वे उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे।

निर्देश :

(i) इस प्रश्न-पत्र के **चार** खंड हैं — **क, ख, ग** और **घ**।

(ii) चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना **अनिवार्य** है।

(iii) यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमानुसार दीजिए।

खंड 'क'

1. अपठित गद्यांश **5**

प्रकृति और मनुष्य का संबंध ऐतिहासिक दृष्टि से काफी बाद में शुरु हुआ, क्योंकि प्रकृति पहले से थी, मनुष्य बाद में आया । लेकिन अपने विकास के क्रम में, मनुष्य ने शीघ्र ही प्रकृति पर अपनी इच्छा आरोपित करनी चाही । और तब से संघर्ष तथा स्वीकृति का एक लोमहर्षक नाटक मनुष्य और प्रकृति के बीच चल रहा है । आज भी मनुष्य प्रकृति का ही पुत्र है । जन्म, जीवन, यौवन, जरा, मरण आदी अपनी अनेक स्थितियों में वह आज भी प्राकृतिक नियमों से मुक्त नहीं हो सका है । इसके बावजूद निरंतर उसकी चेष्टा यही रही है कि वह ज्ञान-विज्ञान की अपनी सामूहिक उद्यमशीलता के बल पर प्रकृति को पूर्णत: अपने वश में कर ले । प्रकृति का संतुलन बिगाड़ने की दिशा में मनुष्य पिछले दो-तीन सौ वर्षों के दौरान इतना अधिक बढ़ चुका है कि अब पीछे हटना असंभव सा लगता है । जिस गति से विभिन्न क्षेत्रों में प्राकृतिक संतुलन बिगाड़ते रहे हैं, उसमें कोई भी कमी व्यावहारिक नहीं प्रतीत होती, क्योंकि हमारी अर्थ व्यवस्थाएँ और दैनिक आवश्यकताएँ उस गति के साथ जुड़-सी गई हैं । क्या हमें ज्ञान नहीं कि जिसे हम अपना आहार समझ रहे हैं, वस्तुत: हमारा दैनिक विष हैं, जो सामूहिक आत्महत्या की दिशा में हमें लिए जा रहा है?

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर सही विकल्प चुनकर लिखिए।

(क) मनुष्य और प्रकृति के बीच चल रहा है - **1**

(i) संघर्ष और स्वीकृति का नाटक। (ii) संबंधों का नाटक।

(iii) ज्ञान-विज्ञान का नाटक। (iv) विजय का नाटक।

(ख) मनुष्य प्रकृति को वश में करना चाहता है - **1**

(i) ज्ञान के बलपर।

(ii) विज्ञान के बलपर।

(iii) ज्ञान-विज्ञान की सामूहिक उद्यमशीलता के बलपर।

(iv) इच्छा के बलपर।

(ग) हम विष को समझ रहे हैं - **1**

(i) आवश्यकता। (ii) आहार।

(iii) गति। (iv) प्रगति।

(घ) आज भी मनुष्य अपनी अनेक स्थितियों में जुड़ा हुआ है - **1**

(i) प्रगति के इतिहास से। (ii) प्रकृति के संतुलन से।

(iii) परिमंडल विज्ञान से। (iv) प्रकृति के नियमों से।

(ङ) गद्यांश का शीर्षक होगा - **1**

(i) प्रकृति। (ii) मनुष्य का इतिहास।

(iii) प्रकृति और मनुष्य। (iv) मनुष्य की विजय।

2. अपठित गद्यांश **5**

सत्य की आराधना भक्ति है । और भक्ति 'सिर हथेली पर लेकर चलने का सौदा' है अथवा वह 'हरि का मार्ग है, जिसमें कायरता की गुंजाइश नहीं है । जिसमें हार नाम की कोई चीज नहीं है । वह तो 'मर कर जीने का मंत्र है' । सत्य का, अहिंसा का मार्ग जितना सीधा है उतना ही तंग भी, खाँडे की धार पर चलने के समान है । नट जिस डोर पर सावधानी से नजर रखकर चल सकता है, सत्य और अहिंसा की डोर उससे भी पतली है । जरा चूके कि नीचे गिरे । पल-पल साधना से ही उसके दर्शन होते हैं । लेकिन सत्य के संपूर्ण दर्शन तो इस देह से असंभव है । उसकी केवल कल्पना ही की जा सकती है । क्षणभंगुर देह द्वारा शाश्वत धर्म का साक्षात्कार संभव नहीं होता। अत: अंत में श्रद्धा के उपयोग की आवश्यकता तो रह ही जाती है । इसी से अहिंसा जिज्ञासु के पल्ले पड़ी । जिज्ञासु के सामने यह सवाल पैदा हुआ कि अपने मार्ग में आनेवाले संकटों को सहे या उसके निमित्त जो नाश करना पड़े, वह करता जाए और आगे बढ़े । उसने देखा कि नाश करते चलने पर वह आगे नहीं बढ़ता, दर का दर पर ही रह जाता है । संकट सहकर आगे तो बढ़ता है ।

उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर सही विकल्प चुनकर लिखिए।

(क) कायरता की गुंजाइश नहीं है - **1**

(i) सत्य में। (ii) भक्ति में।

(iii) अहिंसा में। (iv) धर्म में।

(ख) सत्य और अहिंसा के दर्शन होते हैं - **1**

(i) साधना से (ii) सावधानी से

(iii) देह से (iv) धर्म से

(ग) जिज्ञासू के समक्ष सवाल उठा - **1**

(i) वह मार्ग में आनेवाले कष्टों को सहे ।

(ii) वह मार्ग में आनेवाले कष्टों का नाश करे ।

(iii) वह मार्ग में आनेवाले कष्टों को सहे या उनका नाश कर आगे बढ़े ।

(iv) वह मार्ग में आनेवाले कष्टों को ना सहे।

(घ) वह दर-का-दर पर ही रह गया - **1**

(i) श्रद्धा के उपयोग से। (ii) सत्य के संपूर्ण दर्शन से।

(iii) संकट सहकर चलने पर। (iv) नाश करके चलने पर।

(ङ) 'सिर हथेली पर लेकर चलना' से आशय है - **1**

(i) सिर को हथेली पर पकड़कर चलना ।

(ii) सिर को हथेली से पकड़कर चलना ।

(iii) जान की परवाह न करना ।

(iv) सिर पर हथेली रखकर चलना ।

3. अपठित काव्यांश **5**

मैं मुसाफिर हूँ कि जिसने कभी रुकना न जाना,
है कभी सीखा न जिसने मुश्किलों में सर झुकाना,
क्या मुझे मंजिल मिलेगी या नहीं – इसकी न चिंता,
क्योंकि मंजिल है डगर पर सिर्फ चलने का बहाना,
और तो सब धूल, पथ पर चाह चलने की अमर बस,
मैं अमर पद का न लूँ अधिकार– यह संभव नहीं है ।
पंथ की कठिनाइयों से मान लूँ मैं हार – यह संभव नहीं है।

कर्म रत–जग, हर दिशा से कर्म की आवाज आती,
काल की गति एक क्षण को भी नहीं विश्राम पाती,
मैं रुकूँ भी तो मगर यह रास्ता रुकने न देगा,
राह पर चलते न हम ही, राह भी हमको चलाती,
आज चलने के लिए जब धूल तक ललकारती है,
पंथ की कठिनाइयों से मान लूँ मैं हार – यह संभव नहीं है !

उपर्युक्त काव्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से उपयुक्त विकल्प छाँटकर लिखिए।

(क) कवि ने सीखा नहीं है – **1**

(i) रुकना। (ii) झुकना।
(iii) मुश्किलों में रुकना और झुकना। (iv) चलना।

(ख) कवि को चिंता नहीं है – **1**

(i) मुश्किलों की। (ii) लक्ष्य प्राप्ति की।
(iii) चलने की। (iv) डगर की।

(ग) कवि हार नहीं मानता – **1**

(i) कर्म से। (ii) काल से।
(iii) मार्ग से। (iv) जीवन–पथ की कठिनाइयों से।

(घ) यह संसार कवि को प्रेरणा देता है – **1**

(i) कर्म करने की। (ii) राह पर चलने की।
(iii) हार मानने की। (iv) अमर पद पाने की।

(ङ) इस पद्यांश का उपयुक्त शीर्षक होगा – **1**

(i) यह संभव नहीं। (ii) मुसाफिर।
(iii) मंजिल। (iv) संघर्ष।

4. अपठित काव्यांश **5**

सांस दिए
जितने भी तुमने थे,
उनमें से आधे तो,
पापिन वह
नदिं छीन ले गई।
और सांस थोड़े से
खेल-कूद वाली वह
बाली - सी उमर बीन ले गई।
बाली जो सांस रहे याद मुझे,
हाँ, काफी
रूप - रंग - रास में लुटाए थे।
तेरी गुणगाथा का
था विचार उनसे ही
सांस बाद इनके जो कुछ भी
बच गए थे।
किंतु
उन सांसों के समय
हे देव निठुर
क्या किया तुमने
यह 'सांस' रोग दे डाला ।
पड़ा रहा खटिया पर
नाम नहीं ले पाया,
फेर नहीं पाया हूँ
दो दिन भी मैं माला ।
मांगो मत, मांगो मत,
सांसों का तुम हिसाब ।

उपर्युक्त काव्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से छाँटकर लिखिए।

(क) कवि ने अपना आधे से जादा जीवन किस प्रकार व्यतीत किया? **1**

(i) सोकर तथा खेल-कूद कर। (ii) जागकर।

(iii) विचार कर। (iv) याद कर।

(ख) जीवन के अंतिम पड़ाव में कवि की दुविधा क्या है? **1**

(i) वह शोक के कारण ईश्वर का ध्यान नहीं कर पाता ।

(ii) वह लज्जा के कारण ईश्वर का ध्यान नहीं कर पाता ।

(iii) वह व्यस्तता के कारण ईश्वर का ध्यान नहीं कर पाता ।

(iv) वह रोग के कारण ईश्वर का ध्यान नहीं कर पाता ।

(ग) कवि से सांसों का हिसाब कौन माँग रहा है ? **1**

(i) नींद। (ii) बचपन।

(iii) ईश्वर। (iv) जवानी।

(घ) 'सांसों के हिसाब' से तात्पर्य है - **1**

(i) सांसों की गिनती। (ii) सांसों का लेखा-जोखा।

(iii) जीवन में कर्मों का हिसाब। (iv) जीवन में व्यर्थ गवाएँ समय का हिसाब।

(ङ) कवि ने नींद को क्या बताया है? **1**

(i) हत्यारिन। (ii) निष्ठूर।

(iii) पापिन। (iv) उपर्युक्त सभी।

खंड 'ख'

5. (i) जब तक वाक्य में प्रयुक्त नहीं होते, तब तक स्वतंत्र होते हैं - **1**

(क) पद। (ख) वाक्यांश।

(ग) वर्ण। (घ) शब्द।

(ii) जिन शब्दों में प्रयोगानुसार कुछ परिवर्तन होता है वे कहलाते हैं - **1**

(क) निरर्थक। (ख) सार्थक।

(ग) विकारी। (घ) संज्ञा।

(iii) <u>घर के पीछे लगा हुआ पेड</u> फलों से लदा हुआ है । **1**

रेखांकित में पदबंध का भेद है-

(क) सर्वनाम। (ख) संज्ञा।

(ग) क्रिया। (घ) विशेषण।

(iv) उसने <u>दिन-रात जागकर</u> माँ की सेवा की । रेखांकित में पदबंध का भेद है - **1**

(क) क्रियाविशेषण। (ख) सर्वनाम।

(ग) क्रिया। (घ) संज्ञा।

6. (i) राधा सातवीं कक्षा में पढ़ती है । रेखांकित पद का परिचय है – 1

(क) व्यक्तिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ताकारक

(ख) व्यक्तिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, बहुवचन, कर्ताकारक

(ग) जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ताकारक

(घ) व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ताकारक

(ii) बाजार से कुछ तो लाओ । रेखांकित पद का परिचय है – 1

(क) अनिश्चयवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, बहुवचन, कर्मकारक

(ख) अनिश्चयवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन, कर्मकारक

(ग) निश्चयवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन, कर्मकारक

(घ) निश्चयवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ताकारक

(iii) जब वह खेल-कूद चुका तो पढ़ने लगा । रचना के आधारपर वाक्य का भेद है – 1

(क) संयुक्त। (ख) मिश्र।

(ग) सरल। (घ) आज्ञावाचक।

(iv) आगे बढ़िए । पुरस्कार प्राप्त कीजिए । इस वाक्य से बना संयुक्त वाक्य है – 1

(क) जो आगे बढ़ेगा वह पुरस्कार प्राप्त करेगा ।

(ख) आगे बढ़नेवाले को ही पुरस्कार प्राप्त होता है ।

(ग) पुरस्कार प्राप्त करना है तो आगे बढ़िए ।

(घ) आगे बढ़िए और पुरस्कार प्राप्त कीजिए ।

7. (i) सूर्य उगा और अंधेरा नष्ट हुआ' । रचना के आधारपर वाक्य का भेद है – 1

(क) संयुक्त वाक्य। (ख) विधान वाचक।

(ग) संकेत वाचक। (घ) मिश्र वाक्य।

(ii) निम्नलिखित वाक्यों में मिश्र वाक्य है – 1

(क) कमानेवाला ही खाता है । (ख) जो कमाएगा वह खाएगा ।

(ग) कमाकर ही खाया जाता है । (घ) कमाते हैं और खाते हैं ।

(iii) 'सर्वोत्तम' की संधि-विच्छेद है - **1**

(क) सर्वो+उत्तम। (ख) सर्वो+तम।

(ग) सर्वोत्त+म। (घ) सर्व+उत्तम।

(iv) 'मही+ईश' की संधि है - **1**

(क) महेश। (ख) महईश।

(ग) महीश। (घ) महिश।

8. (i) 'देवालय' में स्वर संधि का कौनसा भेद है - **1**

(क) दीर्घ। (ख) गुण।

(ग) यण। (घ) वृद्धि।

(ii) 'अकालपीड़ित' समस्त पद का विग्रह है - **1**

(क) अकाल का पीड़ित। (ख) अकाल से पीड़ित।

(ग) अकाल के लिए पीड़ित। (घ) अकाल को पीड़ित।

(iii) 'नीला है जो कंठ' का समस्त पद है - **1**

(क) नीलाकंठ। (ख) नीलकंठ।

(ग) कंठनीला। (घ) नीलकंठा।

(iv) निम्नलिखित में से किस पद में तत्पुरुष समास है - **1**

(क) अधपका। (ख) आमरण।

(ग) चक्रधर। (घ) जलधारा।

9. (i) रविवार को प्रदर्शनी देखने के लिए लोगों की भारी भीड़ _____। **1**

उपर्युक्त मुहावरे से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए ।

(क) टूट पडना (ख) बाट ताकना

(ग) ठिठक जाना (घ) दबे पाँव आना

(ii) अन्याय के विरुद्ध _____ हमारा कर्तव्य है । **1**

(क) लाठी उठाना (ख) आवाज उठाना

(ग) सिर उठाना (घ) काम तमाम कर देना

(iii) 'बाट जोहना' मुहावरे का अर्थ है - **1**

(क) बाट निखारना (ख) बाट संवारना

(ग) राह देखना (घ) रास्ते में आना

(iv) 'जिसका धन वह रहे उपास, खानेवाले करें विलास' लोकोक्ति का अर्थ है - **1**

(क) धनवान उपवास करता है ।

(ख) धनवान विलास करता है ।

(ग) जिसके पास खाने को है, वह विलास करता है ।

(घ) धन होते हुए भी अभावपूर्ण जीवन जीना ।

खंड 'ग'

10. किसी एक काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उचित विकल्प चुनकर लिखिए। **5**

ऐसी बाँणी बोलिये, मन का आपा खोइ ।
अपना तन सीतल करै, औरन कौं सुख होई ।।
निंदक नेड़ा राखिए, आँगणि कुटी बँधाई ।
बिन साबण पाँणी बिना, निरमल करै सुभाई ।।

(i) कवि ने कैसी वाणी का प्रयोग करने को कहा है? **1**

(क) शीतल (ख) तीव्र

(ग) मधुर (घ) कटू

(ii) यहाँ 'आपा' का आशय है – **1**

(क) आप (ख) अहंकार

(ग) नियंत्रण (घ) सुध-बुध

(iii) कवि ने किसे समीप रखने की सलाह दी है? **1**

(क) प्रशंसक (ख) शुभचिंतक

(ग) बंधुबांधव (घ) निंदक

(iv) निरमल करै सुभाई – का आशय है – **1**

(क) स्वभाव को निर्मल करना (ख) सुबह की निर्मलता

(ग) भाई की निर्मलता (घ) सुबह ही निर्मल

(v) मीठी वाणी के प्रयोग से क्या मिलता है? **1**

(क) औरों को दुख और अपने तन को शीतलता ।

(ख) औरों को सुख और अपने तन को शीतलता ।

(ग) औरों को सुख और अपने तन को दुख ।

(घ) सभी को कष्ट होता है ।

अथवा

उड़ गया, अचानक लो भूधर
फड़का अपार पारद के पर ।
रव शेष रह गए हैं निर्झर ।
है टूट पड़ा भू पर अंबर ।

धँस गए धरा में सभय शाल !
उठ रहा धुँआ जल गया ताल ।
– यों जलद-यान में विचर-विचर
था इंद्र खेलता इंद्रजाल ।

(i) अचानक कौन उड़ता हुआ प्रतीत होता है? **1**

(क) झरना। (ख) बादल।
(ग) पक्षी। (घ) पहाड़।

(ii) वर्षा ऋतु में पर्वत प्रदेश में किसका शोर सुनाई देता है? **1**

(क) झरनों का। (ख) पक्षियों का।
(ग) नदियों का। (घ) वर्षा का।

(iii) भय के कारण कौन धरती में धँसे हुए प्रतीत होते हैं? **1**

(क) ताल के वृक्ष। (ख) पर्वतों पर उगे हुए।
(ग) शाल के वृक्ष। (घ) घाटियों के वृक्ष।

(iv) जलद-यान में विचर-विचर का आशय है – **1**

(क) वर्षा रुपी यान में सवार होकर घूमना ।
(ख) बादल रुपी यान में सवार होकर घूमना ।
(ग) जल्दी-जल्दी यान में सवार होकर घूमना ।
(घ) जाल के यान में सवार होकर घूमना ।

(v) जादू का खेल कौन दिखा रहा है? **1**

(क) भूधर। (ख) निर्झर।
(ग) इंद्र। (घ) अंबर।

11. निम्नलिखित में किन्हीं दो के उत्तर संक्षेप में दीजिए। **2x2.5=5**

(क) शैलेंद्र ने राजकपूर की भावनाओं को शब्द दिए हैं – इस कथन से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए ।

(ख) कविता में तोप को दो बार चमकाने की बात क्यों की गई है? ये दो अवसर कौन से होंगे।

(ग) पुलिस कमिशनर और कौंसिल के नोटिस में क्या अंतर था?

(घ) बड़े भाई साहब की डाँट फटकार अगर न मिलती तो क्या छोटा भाई कक्षा में अव्वल आता?

12. तताँरा के व्यक्तित्व का परिचय देते हुए बताइए कि उसकी तलवार के विषय में लोगों का क्या मत था? 5

अथवा

फिल्म निर्माता के रूप में शैलेन्द्र की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए ।

13. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए । 5

मै लताड़ सुनकर आँसू बहाने लगता । जवाब ही क्या था । अपराध तो मैंने किया, लताड़ कौन सहे? भाईसाहब उपदेश की कला में निपुण थे । ऐसी-ऐसी लगती बातें कहते, ऐसे-ऐसे सूक्ति बाण चलाते कि मेरे जिगर के टुकड़े-टुकड़े हो जाते और हिम्मत टूट जाती । इस तरह जान तोड़कर मेहनत करने की शक्ति मैं अपने में न पाता था और उस निराशा में जरा देर के लिए मैं सोचने लगता - 'क्यों न घर चला जाऊँ । जो काम मेरे बूते के बाहर है, उसमें हाथ डालकर क्यों अपनी जिंदगी खराब करूँ । मुझे अपना मूर्ख रहना मंजूर था, लेकिन उतनी मेहनत से तो मुझे चक्कर आ जाता था, घंटे दो घंटे के बाद निराशा के बादल फट जाते और मैं इरादा करता कि आगे से खूब जी लगाकर पढूँगा । चटपट एक टाइम-टेबल बना डालता ।

(क) भाईसाहब किस कला में निपुण थे? 1

(ख) निराश होने पर लेखक क्या सोचने लगता? 1

(ग) निराशा के बादल फट जाने पर लेखक क्या इरादा करते? 1

(घ) 'लगती बाते कहना' मुहावरे का वाक्य में प्रयोग कर अर्थ स्पष्ट कीजिए । 2

अथवा

कुछ समय बाद पासा गाँव में 'पशु-पर्व' का आयोजन हुआ । पशु पर्व में हृष्ट-पुष्ट पशुओं के प्रदर्शन के अतिरिक्त पशुओं से युवकों की शक्ति परीक्षा प्रतियोगिता भी होती है । वर्ष में एक बार गाँव के सभी लोग हिस्सा लेते हैं । बाद में नृत्य-संगीत और भोजन का भी आयोजन होता है । शाम से सभी लोग पासा में एकत्रित होने लगे। धीरे-धीरे विभिन्न कार्यक्रम शुरु हुए । ततांरा का मन इन कार्यक्रमों में बिल्कुल न था । उसकी व्याकुल आँखें वामीरों को ढूँढने में व्यस्त थी । नारियल के झुंड के एक पेड़ के पीछे से उसे कोई झाँकता दिखा । उसने करीब जाकर पहचानने की चेष्टा की । वह वामीरो थी जो भयवश सामने आने में झिझक रही थी । उसकी आँखे तरल थी। होंठ काँप रहे थे । ततांरा को देखते ही वह फूटकर रोने लगी । ततांरा विहवल हुआ । उससे कुछ बोलते नहीं बन रहा था। रोने की आवाज लगातार ऊँची होती जा रही थी । ततांरा किंकर्तव्यविमूढ़ था । वामीरो के रुदन स्वरों को सुनकर उसकी माँ वहाँ आ पहुँची और दोनों को देखकर आग-बबूला हो उठी।

(क) पशु-पर्व में क्या होता है? 2

(ख) ततांरा का मन कार्यक्रम में क्यों नहीं लग रहा था? 1

(ग) वामीरो की दशा कैसी थी? 1

(घ) वामीरो को देखकर ततांरा कों क्या हुआ? 1

14. (क) 'पर्वत प्रदेश में पावस' – कविता में कवि ने तालाब की समानता किसके साथ दिखाई है और क्यों? 2

(ख) मीराबाई श्याम की चाकरी क्यों करना चाहती है? 2

(ग) ईश्वर कण-कण में व्याप्त है फिर भी हम उसे क्यों नही देख पाते? 1

15. 'हरिहर काका' कहानी में लेखक ने उनके परिवार तथा 'हरिहर काका' के विषय में क्या बताया है? 3

अथवा

'हरिहर काका' कहानी में ठाकुरबाड़ी के क्या क्या काम बताए गए हैं?

16. हरिहर काका अपनी जिंदगी के शेष दिन किस प्रकार काट रहे थे? 2

खंड 'घ'

17. दिए गए संकेत बिंदुओं के आधारपर लगभग 100 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए। 5

(क) **मधुर वाणी**

- वाणी की मधुरता
- मधुर वाणी एक वरदान
- मधुर वाणी के अच्छे प्रभाव
- मधुर वाणी के प्रयोग की आवश्यकता

(ख) **देशप्रेम**

- जन्म भूमि का महत्त्व
- देश के प्रति कर्तव्य
- देशप्रेम सबसे बढ़कर
- आज देश प्रेम की आवश्यकता

(ग) **आज की पुकार – संयुक्त परिवार**

- युवा पीढ़ी को रिश्तों की पहचान
- मिलजुलकर रहने की भावना
- बुजुर्गों की उपस्थिति व महत्त्व
- अकेलेपन से मुक्ति

18. ग्यार्हवी कक्षा में विज्ञान विषय लेने के लिए अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए । 5

अथवा

अपने क्षेत्र के विद्युत विभाग के अधिकारी को अपना विद्युत-बिल ठीक कराने के लिए पत्र लिखिए ।

- o O o -